# संतकुळीचा राजा

## ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा लिखित अभंग

ध्रुवपद

श्रीगुरु सन्त-कुल के राजा हैं।

पद १

श्रीगुरु सन्त-कुल के राजा हैं,
श्रीगुरु में मेरे प्राण विश्रान्ति पाते हैं।
त्रिलोक में
श्रीगुरु के अतिरिक्त अन्य कोई देव नहीं है।

पद २

श्रीगुरु सुख के सागर हैं।
श्रीगुरु कृपा का आगार [धाम] हैं।
श्रीगुरु धैर्य का पर्वत हैं जो कभी नहीं डगमगाता।

पद ३

श्रीगुरु अथक रूप से साधक की सहायता करते हैं।
श्रीगुरु एक भक्त के लिए माता हैं।
श्रीगुरु कामधेनु गाय हैं
जो अपने भक्तों को कृपारूपी दूध प्रदान करते हैं।

पद ४

श्रीगुरु साधक के नेत्रों में ज्ञान का अंजन लगाते हैं।
श्रीगुरु साधक की अपनी ही आत्मा में छिपी हुई गुप्त सम्पदा को प्रकट कर देते हैं।
सौभाग्य प्रदान कर, श्रीगुरु साधक को ज्ञान में अवस्थित कर देते हैं।

पद ५

श्रीगुरु के उपदेश से काया [देह] काशी हो गई है।
उन्होंने हमें तारक-मन्त्र प्रदान किया है जो हमें भवसागर से पार कराएगा।
ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं, "मेरा मन ध्यान में मग्न है।"

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

## ज्ञानेश्वर महाराज —परिचय

ज्ञानेश्वर महाराज [लगभग १२७५-१२९६] भारत के महाराष्ट्र राज्य के सन्त-कवि थे। उन्होंने 'ज्ञानेश्वरी' तथा 'अमृतानुभव' की रचना की जिन्हें व्यापक रूप से संसार के महानतम आध्यात्मिक ग्रन्थ माना जाता है। 'ज्ञानेश्वरी', श्रीभगवद्गीता पर टीका है और 'अमृतानुभव' ईश्वर के साथ ऐक्य की अनुभूति पर काव्यात्मक ग्रन्थ है। ज्ञानेश्वर महाराज सूक्ष्म सत्यों को सरल व काव्यात्मक भाषा में व्यक्त करने के लिए विख्यात हैं। एक ऐसे समय में, जब भारत में अधिकतर धर्म-ग्रन्थों की भाषा संस्कृत थी, ज्ञानेश्वर महाराज ने स्थानीय भाषा, मराठी में लेखन किया और स्वानुभव के आधार पर शास्त्रीय ग्रन्थों की व्याख्या की।